



CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper

Received on 12.09.2022

Reviewed on 19.09.2022

Accepted on 28.09.2022

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों में आत्महत्या की प्रवृत्ति व मानसिक असंतुलन का अध्ययन करना

*दलीप सिंह

**डॉ दुर्गा भोजक

***डॉ दाऊलाल बोहरा

मुख्य शब्द- संवेगात्मक परिपक्वता, दबाव, तनाव, कुण्ठा, किशोर विद्यार्थी आदि।

सार-संक्षेप

मानसिक रूप से स्वस्थ या सुसमायोजित व्यक्ति अपने व्यवहार में संवेगात्मक परिपक्वता का प्रमाण देता है। इसका अभिप्राय यह है कि उसने भय परिपक्वता ईष्यों जैसे संवेगों को नियंत्रण में रखने और इनको वांछनीय ढंग से व्यक्त करने की क्षमता होती है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति का एक निश्चित जीवन दर्शन होता है। किशोर बालक भविष्य की नींव है, अतः वह सुसमायोजित व मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर ही देश का भावी समाज का निर्माता बनता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि विद्यार्थियों के सामने केवल महँगी उच्च शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित जानकारी न दें। अपितु सरल, सुलभ तथा व्यवसाय के बारे में जानकारी दें, ताकि विद्यार्थी अपनी आकांक्षाओं का विकास उचित दिशा में करें विद्यार्थियों में व्याप्त शिक्षा के प्रति अनावश्यक दबाव, तनाव एवं कुण्ठा को शिक्षक एवं अभिभावक उचित मार्गदर्शन देकर कम कर सकते हैं, क्योंकि दबाव, तनाव एवं कुण्ठा विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, जिससे विद्यार्थी अपेक्षा के अनुसार परीणाम नहीं दे पाते एवं अनुचित कदम उठाते हैं। अतः शिक्षकों एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाना चाहिए, उचित मार्गदर्शन देना चाहिए ताकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थी जीवन से संबंधित दृष्टिकोण के प्रति सकारात्मक सोच का विकास कर सकें।

सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि

शिक्षा का कार्य जीवन भर चलता रहता है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और साम्राज्यपूर्ण उन्नति में योगदान देती है, उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है, उसे अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्व के लिए तैयार कर उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होता है। इस परिवर्तन का नाम विकास है। विकास करना मनुष्य जाति का ही लक्षण है। विकास की प्रक्रिया में बालक कुछ सोपानों या अवस्थाओं में से गुजरता है जिन्हें चार भागों में वर्गीकरण किया गया है। शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढावस्था किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। इस अवस्था को तूफान व संवेगों की अवस्था कहा जाता है। लक्ष्यविहीन शिक्षा का कोई मूल्य नहीं है। शिक्षा द्वारा किशोर बालक की मूल प्रवृत्तियों का शोधन तथा मार्गन्तीकरण इस प्रकार किया जाना चाहिए, जिससे न केवल यह स्वयं के लिए अपितु राष्ट्र के लिए भी हितकारी व कल्याणकारी है। कोचिंग का हब बन चुके राजस्थान का कोटा शहर अब आत्महत्या का हम बनने जा रहा है। यहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से देशभर से आये छात्रों में आत्महत्या की प्रवृत्ति आम होती जा रही है। अभी हाल ही में दो और बच्चों के खुदकुशी कर लिए जाने की खबरें सामने आईं ये छात्र जो देश के भावी कर्णधार हैं जिनसे देश को संवारने की उम्मीद है, वह छोटी सी असफलता बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। यह हमारी शिक्षा व्यवस्था और अभिभावकों के विश्वास की एक बड़ी नाकामी है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था छात्रों में असंतोष को जन्म दे रही है। गुणवत्तापूर्ण तथा रोजगार परक शिक्षा के अभाव में देश में शिक्षित बेरोजगारी का ग्राफ बढ़ता जा रहा है तो दूसरी तरफ प्रतिस्पर्धा हो रही शिक्षा से औसत दर्जे के छात्रों में हीनता की भावना बलवती हो रही है, जो उनके आत्महत्या का प्रमुख कारण है।

आज बच्चों पर सपने थोपे जा रहे हैं। उन्हें बताया जा रहा है कि नम्बर ही सब कुछ है। 90-95 तथा इससे अधिक फीसदी अंक वाले छात्रों का ही नामांकन देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हो रहा है। शेष औसत दर्जे के छात्रों में निराशा घर कर रही है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सभी छात्र छात्राएँ/किशोरोवस्था के अन्तर्गत आते हैं। किशोर विद्यार्थी अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले होते हैं। कतिपय किशोर विद्यार्थियों में माता पिता ऐसे होते हैं कि वो - उन पर दबाव डालते हैं कि आपको उच्चतम अंक प्राप्त करने हैं, ऐसे में उन किशोर विद्यार्थियों के समक्ष समायोजन की समस्या उभरती है। अतः उनके मानसिक स्वास्थ्य पर तीव्र प्रभाव पड़ता है और किशोर भ्रमित अवस्था का शिकार हो जाता है। किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के असंतुलित होने के कारण किशोर विद्यार्थियों के समक्ष समायोजन की समस्या आ जाती है। ऐसी परिस्थिति में किशोर एकांतप्रियाशील अल्पभाषी, संदेही और शंकालु प्रकृति के हो जाते हैं। जो युवाओं में आत्महत्या का प्रमुख कारण बनता है। विद्यार्थी जीवन से सम्बन्धित अनेक ऐसी परिस्थितियों तथा कारण होते हैं, जो विद्यार्थी में असन्तोष पैदा कर देते हैं। विद्यार्थी के सामने कदम कदम पर अनेक समस्याएँ आती -

है, जिन्हें वह पूरी नहीं कर पाता तथा दुःखी होकर रह जाता है। उसे अच्छी शिक्षण संस्था में प्रवेश नहीं मिल पाता है। अच्छे अंकों से परीक्षा पास करने के बाद भी विद्यार्थी को मनचाहा विषय महाविद्यालय तथा तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश नहीं मिल पाता है। इन सब परिस्थितियों का विद्यार्थी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वह असन्तुष्ट होने के कारण अपनी मानसिक और शारीरिक समस्याओं का विघटनकारी प्रवृत्तियों में उपयोग करने लगता है किशोर विद्यार्थियों में यही व्याकुलता अशान्ति असन्तोष, आत्महत्या का प्रमुख कारण बनता है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् किशारे विद्यार्थियों में व्यवहार सम्बंधी अनेक समस्याएँ तथा व्यवहार प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। इन समस्याओं का समाधान करने में परिवार ही वह स्थान जहाँ सबसे पहले बालक का समाजीकरण होता है। किशोरावस्था में जो मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं।

ये व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। यह जीवन का सबसे कठिन काल है। IQUIT माध्यमिक शिक्षा को विद्यार्थी जीवन निर्माण की संज्ञा दी गई है। प्रायः माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में अध्ययन आदते विकसित हो जाती है। उत्तम अध्ययन आदतों के परिणामस्वरूप विद्यार्थी में भविष्य की सफलता एवं असफलता का निर्धारण होता है। यदि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों से सम्बन्धित नींव कमजोर होगी तो उनको शैक्षिक जीवन में प्राप्त होने वाली सफलता सम्बन्धी भवन भी कमजोर होगा। किशोर विद्यार्थियों में सफलता एवं असफलता के बीच नव किशोर विकास एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयास चलता रहता है। इन प्रयासों की सफलता एवं असफलता पर विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का गहन प्रभाव पड़ता है। इस समय स्कूल जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा बढ़ रही है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में बढ़ती आत्महत्या प्रवृत्ति के कारणों का अध्ययन करना माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के मानसिक असंतुलन को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन करना। माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के मानसिक असंतुलन के माध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के माध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। माध्यमिक स्तर पर

विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण के माध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है ।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालय एवं शिवान संस्थाओं के 100 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया । प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है । परिकल्पनाओं के आधार पर शोध निष्कर्ष - परिकल्पना :1 माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में बढ़ती आत्महत्या प्रवृत्ति के कारणों का अध्ययन किया गया है जिसमें विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अर्थात् हो सकता है 13 से 19 वर्ष के माध्यमिक स्तर के विद्यालय जाने वाले विद्यार्थी तथा कोचिंग जाने वाले विद्यार्थी समान शैक्षिक , पारिवारिक व मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ रखते हैं । अतः इसका कारण यह हो सकता है कि किशोर विद्यार्थी मानसिक अवसाद के शिकार हो या उनके परिवार की आर्थिक स्थिति नहीं हो या फिर वह सोशल मीडिया का अत्याधिक उपयोग करते हो । परिकल्पना -2 माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के मानसिक असंतुलन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है । माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले कोचिंग जाने वाले किशोर , विद्यार्थियों के मानसिक असंतुलन का अध्ययन किया गया है जिसमें विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के माध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया । अर्थात् विद्यालय जाने वाले किशोर विद्यार्थियों की अपेक्षा कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में मानसिक असंतुलन ज्यादा पाया गया है । अतः इसका कारण हो सकता है कि विद्यार्थियों के परिवार की आर्थिक दशा सही नहीं हो , पड़ोस का वातावरण अच्छा न हो या फिर उनका निवास स्थान ऐसी जगह पर हो जहाँ ध्वनि प्रदुषण ज्यादा हो जिससे विद्यार्थी पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित न कर पाते हो । परिकल्पना -3 माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया गया है जिसमें विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः हो सकता है विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में पारिवारिक वातावरण से संबंधित समस्याएँ जैसे परिवार की आर्थिक स्थिति , माता पिता का व्यवहार परिवार के अन्य सदस्यों के साथ व्यवहार तथा समायोजन से संबंधित समस्याएँ दोनों घरों में - समान रूप से पायी जाती है । माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन किया गया है जिसमें विद्यालय जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया । विद्यार्थियों में मानसिक असंतुलन का कारण हो सकता है

कि कोचिंग जाने वाले विद्यार्थियों में पढ़ाई का दबाव ज्यादा हो या अच्छे नम्बर न आने के कारण उनमें मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

सम्बंधित कार्य का पूर्व अध्ययन

1. दोना एशबराइड रेबका पेज)2000) * इस शो में एकल संयुक्त परिवार के किशोर विद्यार्थियों के आत्म सम्मान का किया गयाइन्होंने निष्कर्ष में पाया कि एकल परिवार के घरों के बच्चे संयुक्त परिवार के बच्चों की तुलना में कम खुश थे और उन किशोरी के आत्मसमान में कमी पाई गयी जिनके सम्बन्ध माता पिता से कमजोर थे । -

2. मंदरा जैनी , मेरी केरोल्यन बी).2000) इस शोध में अफ्रीकी अमेरिकी किशोर विद्यार्थियों के आत्मसमान पर माता - पिता - पिता की वैवाहिक स्थिति और उनके आय के प्रभाव का अध्ययन किया गया में पाया गया कि अविवाहित माता पिता के किशोरों में आत्मसमान अधिक - की तुलना में विवाहित माता

3. पटेल एम)2000) "अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 13 से 16 आयु वर्ग के किशोर के पारिवारिक वातावरण व उनके आर्थिक स्तर का अध्ययन करना था निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि परिवार की आर्थिक स्थिति किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है ।

4 . सरकार, ए) .2001) इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के किशोर छात्र छात्राओं के पारिवारिक / वातावरण व उनके व्यवहार का अध्ययन करना था अध्ययन में पाया रूप से स्वस्थ बच्चों की तुलना में

5. मजीद ए)Goon) इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के किशोर विद्या के असन्तुलन के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना था । इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि प्रथम कारक आत्मस्वीकृति पर था जो एक से एक खुद के प्रति स्वीकार रवैया परिलक्षित योगदान के लिए दिया गया था द्वितीय कारक संयुक्त समूह , तृतीय कारक छात्र छात्राओं के / अस्तित्व स्वायत्तता चतुर्थ कारक उदारता व अन्तिम व पाँचवा कारक के रूप में मानसिक स्वास्थ्य उभर कर सामने आया ।

6. मुजवानी ई).2004)छात्रा के विद्यालय वातावरण पारिवारिक / इस शोध का मुख्य उद्देश्य कोचिंग करने वाले छात्र " (वातावरण का अध्ययन करना था । इन्होंने में पाया कि माध्यमिक स्तर पर कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर परिवार की आर्थिक स्थिति माता पिता का सम्बन्ध व विद्यालय वातावरण का प्रमुख प्रभाव - छात्राओं में मानसिक तनाव ज्यादा पाया गया । / समस्याओं के कारण छात्र (पड़ता है । शैक्षिक

7. द सी 2004) .सी.डी.) " के अनुसार आत्महत्या करने के प्रमुख तरीकों में 10-प्रतिशत युवा 49 वर्ष के बच्चों में 19 बन्दुक से आत्महत्या करने वाले, इसका तरीका जिसमें प्रतिशत किशोर शामिल है घुटन या लटककर आत्महत्या 38 करने वाले तथा अन्तिम व तीसरा तरीका जो युवा वर्ग अपनाते हैं, जिसमें प्रतिशत युवा वर्ग शामिल है जो जहर 7 खाकर अपना जीवन समाप्त करते हैं ।

अरोड़ा समृद्धि मार्या .8, एनड्राबी और शर्मा नीरू)2004 ने किशोरावस्था में होने वाली दुर्बलताओं से जुड़ी सामाजिक (मनोविज्ञान की रूपरेखा का अध्ययन किया इन्होंने वाक्य पूर्ति जाँच मूल्य प्राप्ति एवं संपत्ति सूची क्रोध का उपयोग किया परिणामों ने यह प्रकट किया कि दुर्बल किशोर अपने परिवार , अध्यापक और अपने समान व्यक्तियों के साथ स्वस्थ संबंध रखते हैं , लेकिन दूसरे लिंग के सदस्यों के साथ मित्रता देखने को नहीं मिलती है । इनमें से अधिकतम लोक उच्च मूल्य प्राप्ति रखते हैं और अधिक विद्यालय संपादन दिखाते हैं जाँच की व्याख्या यह प्रकट करती है , यद्यपि न दुर्बल किशोरी के पास उच्च मूल्य प्राप्ति है , परन्तु उनमें लक्ष्य की कमी और इसका कारण उनके अन्दर संसार के विषय में कम जानकारी तथा जिंदगी जीने के कम मौके हैं ।

9. केली , टी कोमेरिअस जे एण्ड क्लार्क डी) .2004 इस शोध में किशोरावस्था में मादक पदार्थों के सेवन से " (विकृत मानसिक असंतुलन व व्यवहार परिवर्तन के कारण आत्महत्या प्रवृत्ति पर अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि जो युवा शराब का सेवन करते हैं , उनमें मानसिक असंतुलन व आत्महत्या की प्रवृत्ति , शराब का सेवन नहीं करने वाले युवाओं की तुलना में अधिक पाई जाती है "

10. केविन , मरजरीबेक)2005) शोध का मुख्य उद्देश्य किशोरी में पाये जाने वाले मानसिक असंतुलनमहत्या प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना था इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएँ उनमें आत्महत्या का प्रमुख कारण बनता है ।

11. कश्यप और चीना)2005) इस शोध में किशोर विद्यार्थियों की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक निर्धारकों के आधार पर] अध्ययन किया गया । इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि किशोर विद्यार्थियों में चिन्ता हताशा , शैक्षिक , भावनात्मक , अपरिपक्वता आदि के कारण अत्यधिक समस्याएँ पायी जाती है ।

12. सईद नाबीला और के) भारती कुमारी .2005) समायोजन एवं अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । शोध क निष्कर्ष में पाया कि लड़के एवं लड़कियों दोनों का ही संवेगात्मक , सामाजिक , शैक्षिक एवं सम्पूर्ण समायोजन अच्छा पाया गया और समायोजन प्राप्ति के एवं अधिगम शैली में सहसम्बन्ध पाया गया ।

13. इवेनथीया वतरीका काठ)2006) इस शोध में किशोरों की उच्च शिक्षा में माता पिता के योगदान का अध्ययन का - पिता अपने बच्चों की पढ़ाई में सहयोग करते हैं उनमें मानसिक - किया गया । इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि जो माता तनाव कम पाया जाता है ।

14. मीणा , विनित)2006) ने अपने शोध कार्य में किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन व परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन अपने शोध कार्य में किया अध्ययन में पाया गया कि किशोरों में सावैगिक स्थिरता समान नहीं होती ।

15. एम) आर राजू और ख्वाजा सहमुतुला.वी.2007) * इस शोध में विद्यालयी विद्यार्थियों में समायोजन समस्याओं का अध्ययन करना किया गया । शोध में 461 विद्यार्थियों को शामिल किया गया निष्कर्ष में पाया गया कि कक्षा का वातावरण शिक्षण विधियों एवं पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय का विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव पाया गया ।
16. सी विद्या ., वी) .2007) " इस शोध में नवोदय , केन्द्रिय एवं राजकीय स्कूलों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन समस्याओं का अध्ययन किया गया न्होंने निष्कर्ष में पाया कि किशोर विद्यार्थी के व्यक्तिगत पारिवारिक तथा शैक्षिक कारक उनके समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं को प्रभावित करते हैं ।
17. केडिसक केली ए मई) .2007) एडसेन्ट सुसाइड एलिटरेचर रिव्यू ने एममास्टर ऑफ साइंस एजुकेशन) .डी.ई.एस. स्कूल साइकोलॉजी में किशोर अवस्था में आत्महत्या पर अध्ययन कार्य किया शोध अध्ययन में (डिग्री किशोर अवस्था में आत्महत्या को प्रेरित करने वाले कारकों तथा किशोर के व्यवहार पर अध्ययन किया गया है । शोध में पाया गया कि किशोर अवस्था में आत्महत्या व उनके व्यवहार में परिवर्तन के अनेक कारण हैं , जिनमें पारिवारिक पृष्ठभूमि व्यक्तिगत समस्याएँ मनोवैज्ञानिक कारन तथा सामाजिक समस्याएँ प्रमुख रूप से उत्तरदायी है ।
18. कौर आर) .2007) " इस शोध में पारिवारिक वातावरण के संबंध में किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन किया गया । अध्ययन में पाया गया कि उच्च औसत और निम्न स्तर के पारिवारिक माहौल पर सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य प्रेरणा के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है ।
19. जिडेना , रूजेलोवा)2007) * इस शोध में 15 वर्ष तक की किशोर बालिकाओं की समायोजन संबंधी समस्याओं का अध्ययन एवं उनकी समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक किया गया । इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि असामाजिक व्यवहार माता बालिकाओं में समान पाया गया भावात्मक - पिता के साथ व्यवहार तथा समूह के साथ व्यवहार बालक - समस्याएं ओर चिन्ताएं बालक एवं बालिकाओं में समान रूप से प्रभाव डालती है ।
20. शर्मा सुनील कुमार)2007-08)th - अपने शोध कार्य में किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया अध्ययन में पाया गया कि किशोर बालक और बालिकाओं के समायोजन में विभिन्नता पाई जाती है तथा किशोर बालिकाओं का शैक्षिक उपलब्धि स्तर किशोर बालकों से अधिक पाया जाता है ।
21. अकबर हुसैन , आशुतोष कुमार एवं आबिद हुसैन)2008) " ने माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में समायोजन एवं शैक्षिक दबाव शीर्षक पर शोध कार्य किया निष्कर्ष में पाया गया कि पक्षियों के विद्याक्षिक दबाव अधिक पाया गया और सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर उच्चपास गया । -
22. स्टेफिन मेलिक)2000) " इम्यूविंग मेन्टल हेल्दी हेल्थ लाइफस्टाइल चॉइस एण्ड फिजिकल हैल्थ ऑफ हिस्पेनि एडोसेन्ट ए रेसोमाइज कंट्रोलिंग पाइलेट ने युवाओं के जीवन के विभिन्न पहलूओं का मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित

करने वाले सामाजिक वातावरण का अध्ययन किया अध्ययन में पाया कि विद्यालय आधारित प्रणाली नीति से विद्यार्थियों अर्थात् युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है ।

23. साहरन , एम के तथा सेठी ., प्रियंका)2010) * शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक छात्र छात्राओं के - मानसिक स्वास्थ्य पर घरेलूवातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था । इसके कि कथा -12 के ग्रामीण शहरी विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च स्तर का पाया गया ।

24. मार्या , धीरज कुमार)2010) - इनके अध्ययन का उद्देश्य किशोरों के परिवारों के सामाजिक , आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि समायोजन व दुश्चिंता के मध्य संबंध का अध्ययन करना था । इन्होंने इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि उच्च एवं मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरी की शैक्षिक उपलब्धि एवं दुरिचिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है , किन्तु निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं दुश्चिंता में सार्थक सह संबंध है । -

25. मानसिंह)2011) " इस शोध में शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि जिन विद्यार्थियों के अभिभावक शिक्षित थे उन्होंने अपने बच्चों के सम्पूर्ण समायोजन व सुरक्षा असुरक्षा जैसे आयामों पर - अधिक बल दिया तथा जो अभिभावक शिक्षित नहीं थे उन्होंने अपने बच्चों के आत्मसम्प्रत्यय अर्थात् बच्चों द्वारा स्वयं निर्णय लेने पर अधिक बल दिया गया । अतः निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षित अभिभावक की तुलना में अशिक्षित अभिभावक के बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा पाया गया ।

शोध का सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके किशोर पर निर्भर करता है । किशोर बालक के सर्वांगीण विकास का कार्य शिक्षा द्वारा ही संभव है । एक सौदेश्य नैतिक प्रक्रिया है , जो किसी निश्चित दिशा की ओर मुख होती है । लक्ष्यविहीन शिक्षा का कोई मुल्य नहीं है । शिक्षा द्वारा किशोर बालक की मुल मृतियों का शोधन तथा मार्गन्तीकरण इस प्रकार किया जाना चाहिए , जिससे नवल वह स्वयं के लिए अपितु राष्ट्र के लिए भी हितकारी व कल्याणकारी है । कोचिंग का हब बन चुके राजस्थान का कोटा शहर अब आत्महत्या का हब बनने जा रहा है । यहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से देशभर से आये छात्रों आत्महत्या की प्रवृत्ति आम होती जा रही है । अभी हाल ही में दो और बच्चों के बुदकुशी कर लिए जाने की खबरे सामने आईं ये छात्र जो देश के भावी कर्णधार हैं जिनसे देश को संवारने की उम्मीद है , वह छोटी सी असफलता बर्दाश्त नहीं कर रहे हैं । यह हमारी शिक्षा व्यवस्था और अभिभावकों के विश्वास की एक बड़ी नकामी है । वर्तमान शिक्षा व्यवस्था छात्रों में असंतोष को जन्म दे रही है ।

गुणवत्तापूर्ण के अभाव में देश में शिक्षक बद ता है तो दूसरी तरफ प्रतिस्पर्धा हो रही शिक्षा से औसत दर्जे के छात्रों में हीनता जी भावना बलवती हो रही है , जो उनके आत्महत्या का प्रमुख कारण है । आज बच्चों पर सपने थोपे जा रहे हैं। उन्हें बताया जा रहा है कि नम्बर ही सब कुछ है 90-95 तथा इससे अधिक फीसदी अंक वाले छात्रों का ही नामांकन देश

के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हो रहा है। शेष औसत दर्जे के छात्रों में निराशा घर कर रही है। साथ ही हमारे किशोर विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि सफलता एक ही झटके में नहीं मिलती। इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि सफलता एक साथ ही नहीं बल्कि धीरे-धीरे आती है ऊपर चढ़ने के लिए एक-छोटे लक्ष्य तय करके आ-सीढ़ी चढ़नी होती है। जरूरी है छोटे-छोटे बड़ा जाए एक लक्ष्य पूरा होतो अगले लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाया जाना चाहिए, क्योंकि जब शुरूआत में ही बहुत बड़े सपने देखने लगते हैं तो अक्सर निराशा ही हाथ लगती है। ऐसा नहीं है कि देश में अवसरों की कमी है। युवाओं के पास भरपूर अवसर है। इन अवसरों का लाभ उठाने की कोशिश करनी चाहिए। युवा है तो जोखिम लेने के बारे में भी सोचेंगे। सोचना भी चाहिए क्योंकि इसके बिना बड़ी सफलता हाथ नहीं मिलती लेकिन जरूरी है कि जो जोखिम लेने जा रहे हैं उसका पूर्व ऑकलन कर लिया जाये पूर्व ऑकलन यानी अपनी क्षमता को समझाना जरूरी है अपना घर फूंक देना समझदारी नहीं है। दुनिया जहाँ भाग रही है उस तरफ भ्रमने से सफलता नहीं मिलेगी बल्कि कुछ नया करना ही होगा। रेस जीतनी है तो आविष्कार ही करना होगा। जब रोशनी की एक महीन लकीर अंधेरे को चीर सकती है जब एक तिनका दूबते का सहारा हो सकता है और एक आशा भरी मुस्कान निराशा के दलदल से बाहर ला सकती है तो फिर भला मौत को वक्त से पहले क्यों बुलाया जाए? जिन्दगी परीक्षा लेती है तो उसे लेने दीजिए होसलों से आप हर बाजी जीतने का दम रखते हैं यह विश्वास हर मन में होना चाहिए। मानव जीवन के लिए विकास की प्रक्रिया में किशोर अवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। बाल्यावस्था समाप्त होती है और शुरू होती है किशोर अवस्था यह अवस्था युवावस्था अथवा परिपक्वावस्था तक रहती है। यह सतत प्रक्रिया है। इसे बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का सन्धिकाल कहा जाता है। इस अवस्था की विडम्बना होती है कि बालक स्वयं को बड़ा समझता है और बड़े उसे छोटा समझते हैं। किशोर विद्यार्थी अन्तमुखी और वाहमुखी व्यक्तित्व वाले होते हैं य किशोरों में माता पिता ऐसे होते हैं कि दो उन पर दबाव डालो है कि आपको उच्चतम अंक - ऐसे में उन किशोरों के समक्ष समायोजन . प्राप्त करने हैं की समस्या उमरती है। अतः उनके मानसिक स्वास्थ्य पर तीव्र प्रभाव पड़ता है और किशोर अमित अवस्था का शिकार हो जाता है।

किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के असंतुलित होने के कारण किशोरों के समक्ष समायोजन की समस्या आ जाती है। ऐसी परिस्थिति में किशोर एकांतप्रिय लज्जाशील अल्पभाषी, संदेही और शंकर प्रकृति के हो जाते हैं। जो किशोर विद्यार्थियों में आत्महत्या का प्रमुख कारण बनता है। विद्यार्थी जीवन से सम्बन्धित अनेक ऐसी परिस्थितियाँ तथा कारण होते हैं जो विद्यार्थी में असन्तोष पैदा कर देते हैं। विद्यार्थी के सामने कदम कदम पर अनेक समस्याएँ आती हैं - , जिन्हें यह पूरी नहीं कर पाता तथा दुःखी होकर रह जाता है। उसे अच्छी शिक्षण संस्था में प्रवेश नहीं मिल पाता है। अच्छे अंको से परीक्षा पास करने के बाद भी विद्यार्थी को मनचाहा विषय विद्यालय तथा तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश नहीं मिल पाता है। इन सबका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वह असन्तुष्ट होने के कारण अपनी मानसिक और शारीरिक समस्याओं का विघटनकारी प्रवृत्तियों में उपयोग करने लगता है कि यह व्याकुलता अशान्ति अका प्रमुख कारण बनता है। किशोरों में व्यवहार सम्बंधी अनेक समस्या तथा वाह्य प्रवृत्तियाँ पाई जाती है। इन समस्याओं का समाधान

करने में परिवार हो वह स्थान जहाँ सबसे पहले बालक का समाजीकरण होता है । किशोरावस्था में सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं वे अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं । यह जीवन का सबसे कठिन काल है । सैद्धान्तिक दृष्टि से किशोरावस्था जीवन के प्रथम पुनरावृत्ति मानी जाती है । एक किशोर न तो बालक होता है और प्रौढ हाई स्कूल के अंतिम वर्षों में अथवा कॉलेज जीवन के प्रथम , द्वितीय और तृतीय वर्षों में बालक प्रायः किशोरावस्था में ही होता है । :

उस समय उसकी बुद्धि कार्य अभिवृत्ति सम्प्राप्ति एक दूसरे से भिन्न होती है । किशोरावस्था में विभिन्न गुण परिपक्वा - नयी विशिष्ट समस्या उत्पन्न - अवस्था में नहीं होते हैं । लेकिन प्रचुर मात्रा में होते हैं । इसीलिए इस अवस्था में नयी होती है । सर्वांगीण विकास से अभिप्राय बालक का मानसिक , भौतिक , सामाजिक , आध्यात्मिक , नैतिक एवं शारीरिक विकास है । प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में माध्यमिक स्तर की शिक्षा काफी महत्वपूर्ण होती है । माध्यमिक शिक्षा को विद्यार्थी जीवन निर्माण की संज्ञा दी गई है । प्रायः माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में अध्ययन आदत विकसित हो जाती है उत्तम अध्ययन आदतों के परिणामस्वरूप विद्यार्थी में भविष्य की सफलता एवं असफलता का निर्धारण होता है । यदि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों से सम्बन्धित नींव कमजोर होगी तो उनको शैक्षिक जीवन में प्राप्त होने वाली सफलता सम्बन्धी भवन भी कमजोर होगा । किशोर विद्यार्थियों में सफलता एवं असफलता के बीच नव किशोर विकास एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयास चलता रहता है । इन प्रयासों की सफलता एवं असफलता पर विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का गहन प्रभाव पड़ता है । इस समय स्कूल जाने वाले व कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा बढ़ रही है । इसके बहुत से पहलू हैं । जैसे सुसाइड अटेम्प्ट पूर्णतः आत्महत्या यद्यपि बहुत से मानसिक स्वास्थ्य अस्पताल व मानसिक स्वास्थ्य संस्थाएँ उपलब्ध हैं जहाँ किशोर छात्र छात्राएँ अपनी /समस्या का समाधान पा सकते हैं लेकिन क्या कारण है कि लगातार इस प्रकार की घटनाएँ बढ़ती ही जा रही हैं ।

NCRB के अनुसार 2008 के आँकड़ों के अनुसार 2007 तक कुल 1976 छात्र छात्राओं विभिन्न परीक्षाओं में फेल होने के / कारण आत्महत्या है । 2006 में यह संख्या बढ़कर 2100 तक पहुँच गयी थी । 2006 का साल इस लिहाज से बहुत खराब माना जायेगा जिस दौरान 5857 छात्र छात्राओं यानि हर दिन परीक्षा के दबाव ने -16 विद्यार्थियों को आत्महत्या के लिए मजबूर किया । इन रिपोर्टों को देखने से लगता है कि आने वाले अगले वर्षों में यह स्थिति और भी भयानक रूप लेने वाली है । इस रिपोर्ट का एक दूसरा पहलू और भी दुःखद है जो हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था के उस आदर्श पर प्रश्न चिन्ह लगाता है जिसके महा वाक्य आनन्दमयी शिक्षा अनिवार्य शिक्षा , सर्व क्षा , खेल खेल में शिक्षा और अब शिक्षा का - अधिकार जैसे कई मुहावरों से भरे पड़े हैं । यह रिपोर्ट इन आडम्बरों की पोल खोलती है जिसके अनुसार पिछले वर्षों में हुई कुल आत्महत्याओं में केवल 21.8 प्रतिशत ऐसे लोग हैं जिन्होंने कभी किसी तरह से कोई स्कूली व अन्य औपचारिक शिक्षा नहीं ली क्या हम ऐसा कह सकते हैं कि स्कूल न जाने से कितने लोग आत्महत्या करने वाले मामलों में प्राथमिक शिक्षा ले चुके लोगों की संख्या सबसे ज्यादा यानि 252 % दूसरे स्थान पर माध्यमिक तक शिक्षा ले चुके। 2 % तथा दसवीं तक पढ़ने वाले 17.6 % हायर सैकण्डरी का 8.1 % स्नातक का 1.9 % तथा स्नातकोत्तर या इससे आगे पढ़ाई करने वालों का प्रतिशत 03 है । विद्यार्थियों में आज नैतिकता % , सामाजिकता , साहचर्य , परोपकार , समायोजन , पोषण , अच्छी

आदतें , रहन सहन -, नित्यकर्म , योग और उत्तम परिवेश व वातावरण आदि की जानकारी होना अत्यधिक आवश्यक है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक हैं । यह एक राष्ट्रीय चिन्ता का विषय है कि क्यों हमारे किशोर साथी खुदखुशी के रास्ते को अपना रहे हैं । हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो गयी है कि बिना कोचिंग के हमारे बच्चे बेहतर कर ही नहीं पायेंगे , एक तरह से यह भारतीय परिवारों की सोच भी बन गयी है बच्चों को हर चीज के लिए आज कोचिंग करने की जरूरत पड़ रही है । बात सिर्फ सिविल सर्विस की तैयार करने या आइआइटीआइआइएम जैसे संस्थाओं में दाखिला लेनेकी नहीं है बल्कि हर छोटी बड़ी तैयारियों के लिए आज बच्चों को कोचिंग पर ही निर्भर रहना पड़ता है । कोचिंग कभी यह व्यवस्था उच्च स्तर की प्रतिस्पर्धा पैदा करती है, बढ़ती प्रतिस्पर्धा में पिछड़ना कभी कभी बच्चों में जानलेवा साबित हो जाता है । मेडिकल और इंजीनियरिंग की कोचिंग के लिए विख्यात कोटा शहर में एक के बाद कोचिंग छात्रों की खुदखुशी की घटनाएँ चिन्ताजनक है । बच्चों पर पढ़ाई का दबाव व अभिभावकों की उम्मीदें इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार हैं । सरकार भले ही इन घटनाओं को लेकर चिन्तित दिखती है लेकिन रोकथाम को लेकर ठोस व ईमानदार प्रयास नजर नहीं आते ।

मेंटल हेल्थवीक)4 से 10 अक्टूबर , 2016) की रिपोर्ट के अनुसार इसी साल कोटा में मेडिकल की प्रवेश की तैयारी में लगी एक छात्रा ने आत्महत्या कर ली । 16 साल की यह लड़की बिहार से थी । पुलिस का कहना था कि स्नेहा नाम की इस लड़की पढ़ाई के अत्यधिक दबाव के कारण मानसिक तनाव से जुझ रही थी । ऊपर की गई घटनाएँ समाज में लगातार बढ़ती एक समस्या की तरफ इशारा कर रही हैं वह हैं बढ़ते दबाव की वजह से पैदा होता तनाव यह तनाव इस कदर बढ़ रहा है कि किशोर विद्यार्थियों के लिए इसे बर्दाश्त करना मुश्किल होता जा रहा है । नतीजतन वे हमलावर हो जाते हैं । कभी खुद पर तो कभी किसी और पर घटना पारिवारिक सहयोग अकेलापन सर्वोत्तम बनने की चाह ने उनके सोचने समझने और फैसला लेने की शक्ति को कुंद कर उ -नमें तनाव भर दिया है । मनोवैज्ञानिकों की माने तो सोसायटी , सिनेमा , सोशल मीडिया जैसे कई फैक्टर हैं , जो इस तनाव को और बढ़ा रहे हैं । किशोरावस्था माता पिता तथा अध्यापक दोनों के लिए तथा साथ ही बालक के स्वयं के लिए समस्या प्रधान होती है । यह वह समय होता है जब व्यक्ति सांसारिक जीवन के लिए तैयारी करता है । समस्या का मुख्य कारण यह है कि किशोरावस्था , बाल्यावस्था और प्रौढावस्था के मध्य का काल है । इसका परिवर्तन का काल भी कहते हैं किन्तु इस तथ्य से अवगत व्यवहार करते हैं । उसको स्वतंत्र रूप से कार्य करने के अयोग्य समझते हैं और कभी कभी उससे प्रौढ जैसा व्यवहार करने की अपेक्षा करते हैं । किशोरावस्था को ठीक प्रकार से न समझने के कारण माता पिता का किशोरों के प्रति व्यवहार किशोरों में अनेक समस्याओं को जन्म देने में सहायक होता है । किशोरावस्था में अस्थिरता के कारण किशोर को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । उसमें मानसिक द्वन्द्व की स्थिति पैदा हो जाती है । सामान्यतया किशोर सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन की समस्या अनुभव करता है । कभी वह स्वतंत्र रहना पसन्द करता है , किन्तु शीघ्र ही माता पिता के संरक्षण की आवश्यकता -अनुभव करता है । इस प्रकार माध्यमिक स्तर पर विद्यालय जाने वाले कोचिंग जाने वाले किशोर विद्यार्थियों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति व मानसिक असन्तुलन से सम्बन्धित समस्याएँ को मध्य

नजर रखते हुए शोधार्थी के मन में इन समस्याओं का अध्ययन करने का विचार आया जिसके कारण द्वारा अपने शोध कार्य के लिए इस समस्या का चयन किया गया। समस्या से उमरने वाले प्रश्न निम्नांकित है 6.758. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशारे विद्यार्थियों में अवसाद क्यों बढ़ता जा रहा है ? माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों को शैक्षिक पारिवारिक मानसिक समस्याओं का सामना क्यों करना पड़ता है। अभिभावकों का प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, बच्चों के लिए प्रेरणास्पद होने के साथ साथ तनाव कम करने में भी सहायक होता है। अभिभावकों को - किशोर विद्यार्थियों को घर में शांत वातावरण प्रदान करना चाहिए ताकि उनका मानसिक तनाव न बढ़े अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को घर के कार्यों में अत्यधिक व्यस्त न करें तथा उनके अध्ययन के लिए सुनिश्चित समय का निर्धारण करें। अत्यधिक कठोर अनुशासन, संरक्षण अस्वीकृति तथा उपेक्षा, इन प्रमुख दशाओं से बचकर अभिभावकों को अपने बच्चों के प्रति उचित संरक्षण देना चाहिए। किशोर विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिए माता - पिता को चाहिए कि वे ऐसा कार्य सौंपें, जिसे करके बालक आत्मसंतोष का अनुभव कर सकें, उसकी असफलता पर उसे दोषी ठहरना, हँसी उड़ाना और भला बुरा कहना ठीक नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सभी बालक किशोरावस्था में होते हैं तथा ये अवस्था बच्चों के बनने तथा बिगड़ने की अवस्था कही जाती है, जिसमें वे भौतिक सुविधाओं की ओर ज्यादा आकर्षित होने लगते हैं, जो विद्यार्थियों में दुःख या कुण्ठा का कारण बनती है। इसीलिए किशोर मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षक तथा अभिभावक, किशोरों की स्थिति को समझने तथा उनको वांछित दिशा प्रदान करने में विशेष सहयोग दे सकते हैं।

यह सहयोग इस प्रकार दिया जा सकता है

1. किशोरों में शारीरिक परिवर्तन के समय जो बाधाएँ उत्पन्न होती हैं, उनको खेलकूद, व्यायाम, शारीरिक शिक्षा माध्यम से दूर किया जा सकता है।
2. किशोरों की शिक्षा में कला, विज्ञान, भूगोल, इतिहास आदि विषयों का समावेश किया जाना चाहिए।
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा किशोरों के संवेगों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
4. सामूहिक योजना विधि द्वारा शिक्षण, सामूहिक कार्य स्काउटिंग गाइडिंग आदि के द्वारा किशोरों में स्वस्थ सामाजिक सम्बंध विकसित किये जा सकते हैं।
5. मार्गदर्शन कार्यक्रम के द्वारा वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर उन्हें व्यवसाय चयन में सहायता दी जा सकती है।

6. जीवन दर्शन का महत्व बताते हुए किशोरों की यौन भावना का मार्गन्तीकरण किया जा सकता है। उनमें नैतिकता का विकास होता है और ये आत्महत्या व मानसिक असन्तुलन की प्रवृत्ति से बच जाते हैं। किशोर, राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान करने वाला होता है।

अतः किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर अन्यर्थ दबाव न डालने की कोशिश माता पिता तथा शिक्षकों को करनी चाहिए - क्योंकि मानव जीवन में सफलता प्राप्ति हेतु जितना महत्व शारीरिक स्वास्थ्य का होता है, उतना ही महत्व मानसिक स्वास्थ्य का भी होता है। तथा मानव या व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य उसके समायोजन पर निर्भर करता है। शिक्षा का एक प्रमुख कर्तव्य व्यक्ति को परिवर्तित वातावरण के अनुसार स्वयं को ढालने में सहायता करना होता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि किशोर समायोजित हो। मानसिक रूप से स्वस्थ या सुसमायोजित व्यक्ति अपने व्यवहार में संवेगात्मक परिपक्वता का प्रमाण देता है। इसका अभिप्राय यह है कि उसने भय परिपक्वता ईष्यों जैसे संवेगों को नियंत्रण में रखने और इनको वांछनीय ढंग से व्यक्त करने की क्षमता होती है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति का एक निश्चित जीवन दर्शन होता है। किशोर बालक भविष्य की नींव है, अतः वह सुसमायोजित व मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर ही देश का भावी समाज का निर्माता बनता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि विद्यार्थियों के सामने केवल महँगी उच्च शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित जानकारी न दें अपितु सरल, सुलभ तथा व्यवसाय के बारे में जानकारी दें, ताकि विद्यार्थी अपनी आकांक्षाओं का विकास उचित दिशा में करें विद्यार्थियों में व्याप्त शिक्षा के प्रति अनावश्यक दबाव, तनाव एवं कुण्ठा को शिक्षक एवं अभिभावक उचित मार्गदर्शन देकर कम कर सकते हैं, क्योंकि दबाव, तनाव एवं कुण्ठा विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, जिससे विद्यार्थी अपेक्षा के अनुसार परीणाम नहीं दे पाते एवं अनुचित कदम उठाते हैं अतः शिक्षकों एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाना चाहिए, उचित मार्गदर्शन देना चाहिए ताकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थी जीवन से संबंधित दृष्टिकोण के प्रति सकारात्मक सोच का विकास कर सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. दोना एशबराइड रेबका पेज (2000) * इस शो में एकल संयुक्त परिवार के किशोर विद्यार्थियों के आत्म सम्मान का अध्ययन
2. मंदरा जैनी, मेरी केरोल्यन बी .(2000) इस शोध में अफ्रीकी अमेरिकी किशोर विद्यार्थियों के आत्मसमान पर माता-पिता की वैवाहिक स्थिति और उनके आय के प्रभाव का अध्ययन
3. पटेल एम (2000) " अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 13 से 16 आयु वर्ग के किशोर के पारिवारिक वातावरण व उनके आर्थिक स्तर का अध्ययन
4. सरकार, ए. (2001) इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के किशोर छात्र / छात्राओं के पारिवारिक वातावरण व उनके व्यवहार का अध्ययन

5. मजीद ए (Goon) इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के किशोर विद्या के असन्तुलन के विभिन्न आयामों का अध्ययन
6. मुजवानी ई (2004) " इस शोध का मुख्य उद्देश्य कोचिंग करने वाले छात्र / छात्रा के विद्यालय वातावरण पारिवारिक वातावरण का अध्ययन
7. द सी.डी.सी. (2004) " के अनुसार आत्महत्या करने के प्रमुख तरीकों में 10-19 वर्ष के बच्चों में 49 प्रतिशत युवा बन्दुक से आत्महत्या का अध्ययन
8. अरोड़ा समृद्धि मार्या , एनझाबी और शर्मा नीरू (2004) ने किशोरावस्था में होने वाली दुर्बलताओं से जुड़ी सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा का अध्ययन
9. केली, टी कोमेरिअस जे एण्ड क्लार्क डी . (2004) " इस शोध में किशोरावस्था में मादक पदार्थों के सेवन से विकृत मानसिक असंतुलन व व्यवहार परिवर्तन के कारण आत्महत्या प्रवृत्ति पर अध्ययन
10. केविन, मरजरीबेक (2005) शोध का मुख्य उद्देश्य किशोरी में पाये जाने वाले मानसिक असन्तुलनमहत्या प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन
11. कश्यप और चीना (2005) इस शोध में किशोर विद्यार्थियों की समस्याओं का [मनोवैज्ञानिक निर्धारकों के आधार पर अध्ययन
12. सईद नाबीला और के . भारती कुमारी (2005) समायोजन एवं अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन
13. इवेनथीया वतरीका काउ (2006) इस शोध में किशोरों की उच्च शिक्षा में माता - पिता के योगदान का अध्ययन
14. मीणा, विनित (2006) ने अपने शोध कार्य में किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वा का अध्ययन व परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
15. एम.वी.आर राजू और ख्वाजा सहमुतुला (2007) * इस शोध में विद्यालयी विद्यार्थियों में समायोजन समस्याओं का अध्ययन करना
16. सी. विद्या, वी . (2007) " इस शोध में नवोदय , केन्द्रिय एवं राजकीय स्कूलों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन समस्याओं का अध्ययन
17. केडिसक केली ए. (मई 2007) एडसेन्ट सुसाइड एलिटेरेचर रिव्यू ने एम.एस.ई.डी. (मास्टर ऑफ साइंस एजुकेशन डिग्री) स्कूल साइकोलॉजी में किशोर अवस्था में आत्महत्या पर अध्ययन
18. कौर आर. (2007) " इस शोध में पारिवारिक वातावरण के संबंध में किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन
19. जिडेना, रूजेलोवा (2007) * इस शोध में 15 वर्ष तक की किशोर बालिकाओं की समायोजन संबंधी समस्याओं का अध्ययन

20. शर्मा सुनील कुमार (2007-08)th - अपने शोध कार्य में किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन
21. अकबर हुसैन , आशुतोष कुमार एवं आबिद हुसैन (2008) " ने माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में समायोजन एवं शैक्षिक दबाव का अध्ययन
22. स्टेफिन मेलिक (2000) " इम्यूविंग मेन्टल हेल्दी हेल्थ लाइफस्टाइल चॉइस एण्ड फिजिकल हेल्थ ऑफ हिसपेनि एडोसेन्ट ए रेसोमाइज कंट्रोलिंग पाइलेट ने युवाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं का मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले सामाजिक वातावरण का अध्ययन
23. साहरन , एम . के तथा सेठी , प्रियंका (2010) * शोध अययन के मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक छात्र - छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन
24. मार्मा , धीरज कुमार (2010) - इनके अध्ययन का उद्देश्य किशोरों के परिवारों के सामाजिक , आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि समायोजन व दुश्चिन्ता के मध्य संबंध का अध्ययन
25. मानसिंह (2011) " इस शोध में शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

Corresponding Author

****Dalip Singh, Assistant Professor***

*****Dr Durga Bhojak, Assistant Principal
Seth G B Podar T T College, Nawalgarh***

******Dr Daulal Bohra, HoD (Zoology)***

Seth G B Podar College, Nawalgarh

E-mail- daulalbohara@yahoo.com, Mob.- 9460855895